Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ केदार गौरी व्रत का महत्व ॥

॥ जय केदारेश्वर गौरी ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ शिव और गौरी की संयुक्त आराधना ॥

अर्धनारीश्वर का संकेत

केदार गौरी व्रत में भगवान शिव को केदारेश्वर और माता गौरी को साथ स्मरण किया जाता है। अर्धनारीश्वर रूप जीवन में शक्ति और चेतना की एकता का धार्मिक प्रतीक है। यह संबंधों में सहयोग और आदर की प्रेरणा देता है।

दीपावली से संबंध

दक्षिण भारत, विशेषकर तमिल परंपरा में दीपावली अमावस्या के दिन विशेष पूजा होती है। कुछ घरों में अमावस्या पर समाप्त होने वाला इक्कीस दिन का संकल्प रखा जाता है; कई घर मुख्य तिथि पर एक दिन की पूजा करते हैं। स्थानीय पंचांग से तिथि देखें।

इक्कीस का प्रतीक

दीर्घ व्रत में इक्कीस दिनों की नियमितता तथा सूत के तोरम की परंपरा मिलती है। धागे की लड़ियों और गाँठों का विधान अलग परिवारों में अलग हो सकता है। उपलब्धता या संख्या के कारण श्रद्धा की पूजा न रोकें।

यह पर्व स्त्री और पुरुष दोनों के लिए संयुक्त शिव-गौरी आराधना का अवसर है। कठिन उपवास किए बिना भी प्रार्थना, कथा और सेवा से सहभागिता की जा सकती है।

॥ व्रत का व्यावहारिक भाव ॥

संयम और नियमितता

प्रतिदिन थोड़े समय की पूजा, साफ स्थान, दीप और नाम-स्मरण साधना में निरंतरता लाते हैं। अपने घर के कार्य और स्वास्थ्य के साथ समय का संतुलन रखें। एक दिन की पूजा में भी संकल्प और कृतज्ञता का भाव रखा जाता है।

संबंधों में सम्मान

शिव और शक्ति को साथ देखने का संदेश घर में दूसरों के काम, विचार और योगदान को महत्व देना है। परिवार के मंगल की प्रार्थना के साथ व्यवहार में सहयोग भी रखें।

स्थानीय रूप

कहीं कलश में केदारेश्वर का आवाहन होता है; कहीं शिवलिंग या अर्धनारीश्वर चित्र सामने रखकर पूजा होती है। नैवेद्य, धागा और उपवास की रीति घर के अनुसार बदलती है।

दीपावली के अन्य पूजन साथ हों तो स्थान और दीप सुरक्षित रखें। व्रत को परिणाम की गारंटी मानकर चिकित्सा, भोजन या आर्थिक जिम्मेदारी न टालें।

॥ ॐ नमः शिवाय ॥